ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 205-207

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

समकालीन कला में बढ़ता बाजारवाद

1. सोनिया
2. डॉ0 अलका तिवारी

1. शोध अध्येत्री– आई.एन.एम., पी.जी. कॉलेज, 2. एसोसिएट प्रोफेसर– चित्रकला विभाग, एन0 ए0 एस0 कालेज, मेरठ समन्वयक– ललित कला विभाग, चौ0 चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ (उ0प्र0), भारत

Received-05.06.2022, Revised-09.06.2022, Accepted-12.06.2022 E-mail: sr440266@gmail.com

सारांशः – *मानव – समाज जब से सामूहीकरण की प्रवृत्ति में स्थापित हुआ है, वह ऐच्छिक और अनैच्छिक रूप से एक दूसरे पर आश्रित हुआ है। जीवनयापन हेतु मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति हो या जीवन में भोग– विलास और मनोरंजन, इन सबकी पूर्ति किसी के लिए भी एकाकी रूप से सम्भव नहीं है। एक दूसरे के उपयोग, उपभोग और आवश्यकता की पूर्ति के विकल्प के रूप में हम आज बाजार की ओर देखते हैं। जहाँ दैनिक वस्तुओं से लेकर बड़े से बड़े साजो सामान की पूर्ति का माध्यम हमारे सामने उपस्थित हैं।*

इसी बाजार ने जीवन, समाज, राष्ट्र और विश्व को सर्वथा नये परिवेश से परिचित कराया हैं। और यदि मनुष्य के स्वभाव की बात करें तो वह अपने से जुड़ी हर वस्तु की गुणवत्ता को मापने के लिए व्यापारिक दृष्टिकोण को स्वीकार करता हैं। उसे लाभ और हॉनि के मापदण्डों पर रख ही देता है।

बाजार – वाद की ये दृष्टि उसके जीवन के चुनिंदा क्षेत्रों को छोड़कर बाकि सभी पर लागू रहती हैं। इसी बाजारवाद ने जीवन, समाज, राष्ट्र और विश्व को सर्वथा नये परिवेश से परिचय कराया है। इसी क्रम में यदि कला को भी जोछ दिया जाय, तो आश्चर्य का विषय नहीं होगा।

कला की सभी विधाओं को बाजार ने अपनी प्रवृत्ति के अनुरूप प्रभावित और नियंत्रित किया हैं। इस स्थिति को यदि हम इन शब्दों में कहे कि कला विधाओं को बाजारवाद ने झकझोर दिया है तो अतिश्योक्ति नही होगी।

कुंजीभूत शब्द– सामूहीकरण, ऐच्छिक और अनैच्छिक रूप, मनोरंजन, दैनिक वस्तुओं, परिवेश से परिचित, गुणवत्ता।

औपनिवेशवाद में धर्म की एक विशेष भूमिका होती हैं, जो संस्कृति, भाषा, कला और चिंतन के समानान्तर गतिशील रहती हैं। भारतीय परिपेक्ष्य में समकालीन कला और बाजारवाद को बेहतर समझने के लिए हमें भारतीय कला के समकालीन तत्वों से जुड़ी आधुनिकता की जाँच करनी होगी।

समकालीन कला बाजार की सबसे बड़ी सच्चाई यह है कि नीलामी के द्वारा खरीद फरोख्त होने की व्यापक गतिविधियों में लाभ का सबसे छोटा हिस्सा कलाकारों के हिस्से में आता हैं।

बाजार– वाद की चपेट में चित्रकला के बदलते स्वरूप को भी हम नजर अंदाज नहीं कर सकते हैं। आज हर शहर में कला संस्थानों की बाढ़ सी आ गई हैं। जो भी चाहे तीन माह या छः माह का डिप्लोमा लेकर कलाकारों की पंक्ति में खड़ा हो सकता है। जिस स्तर के वे कलाकार निर्मित होते है, उनकी कला को बढ़ावा देने के लिए उसी स्तर के निवेशक सामने आ रहे हैं। जो कला साधी ना गई हो उसकी गुणवत्ता प्रश्नों के घेरे में ही खड़ी रहती है। तमाम तरह के निजी संस्थान आज अपने लिए एक ऐसे कला– बाजार का उदय कर चुके है, जो केवल उनके बड़े– बड़े निवेशकों, उनकी पहचान उनके सम्बन्धों पर टिके हैं, उनको कला की गुणवत्ता से कोई सरोकार नहीं रह गया हैं और कला– कलाकार उसकी पहचान आज चकाचौंध के बीच में धुंधली पडती जा रही है।

भारत की लोक–कला पर हजारों वर्षों से आक्रमण होते रहे है, पर आश्चर्य की बात यह है कि ये कलाएं अपने जनोन्मुखी चरित्र और समाज के साथ साझेदारी के चलते अपने मूल रूप को सदियों से अप्रभावित रखे हुए है।

आधुनिक कला बाजारों में कलाकार की कृतियों के बारे में चर्चा कम उसकी कीमतों की चर्चा ज्यादा हो रही हैं। बाजार में किसी भी उत्पाद की बिक्री का सामान्य सा नियम है, उसका प्रचार करना। जो चित्रकला के व्यापार में भी आज उतना ही महत्व प्रचार का हो चला हैं। इसी संदर्भ में कला समीक्षक का एक नया ही स्वरूप ही उभरकर सामने आया हैं। समकालीन कला समीक्षक का अंग्रेजी में होना फैशन से बढ़कर मजबूरी हो गया हैं।

औपनिवेश काल के आरम्भ से ही भारतीय चित्रकला का शहर केन्द्रिक रूप सामने आया, जो लाखों गावों, कस्बों की कला संस्कृति को पिछड़े और अनपढ़ वर्ग की संस्कृति घोषित करते हुए शहर विशेष की कला संस्कृति को भारत की कला संस्कृति के रूप में थोप दिया गया।

भारत में अंग्रेजों के आगमन के साथ ही उसके सभी क्षेत्रों जैसे– शिक्षा, संस्कृति, कला आदि पर उनकी कटु दृष्टि रही हैं। वे हर सम्भव प्रयास में रहे कि इसकी विद्यवत्ता को कैसे नष्ट किया जाए।

व्यापार भारत में पहले भी होता था, मगर उसके व्यापार का उद्देश्य केवल धन लाभ न होकर चहुंमुखी विकास का

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

होता था। जो वस्तुएं हमारे पास थी, उन्हें देश से बाहर भेजना और अपनी आवश्यकताओं की वस्तुओं को मंगाना बाजारध्व्यापार की प्रथम नींव होता हैं। मगर अंग्रेजों के लिए यह आवश्यक था कि वह सर्वप्रथम अपने औपनिवेशिक केन्द्रों को बड़े– बड़े शहरों में स्थापित करना, जो उन्होने किया भी। कलकत्ता भारत के पहले औपनिवेशिक शहर के रूप में विकसित हुआ इसलिए बंगाल की भाषा संस्कृति, कला औपनिवेशिक प्रभावों का पहला शिकार बनी। बंगाल की भाषा में संस्कृति और शिल्पकला जैसे शब्द अंग्रेजी उपनिवेशवाद के पूर्ण विकसित दौर के सबसे प्रतिनिधि रविन्द्रनाथ ठाकुर की देन हैं। बांग्ला भाषा के पहले शब्द कोश का संकलन भी अंग्रेजों ने किया था और शब्दों के उनके सन्दर्भों और अर्थो के व्यापक अनर्थ आज भी शब्द कोशों में मौजूद हैं। इन सब के प्रभावों से युक्त अंग्रेजों ने नगर– केन्द्रित कला को जन्म दिया और भारतीय परम्परागत कला की मूलधारा को शिक्षा और ज्ञान के केन्द्रों से काट दिया।

यूरोपीय कला इतिहास और सिद्धान्तों को श्रेष्ठ मानने वाले कला शिक्षकों, कला समीक्षकों और अंग्रेज कला प्रेमियों ने भारतीय कला को सिरे से खारिज कर दिया।

चित्रकला के लोक स्वरूप को अपने चित्रों का आधार बनाने वाले कलाकार यामिनी राय जैसे उदाहरण केवल गिनती के रह गये है, जो भारतीय चित्रकला में कम ही देखने को मिलते हैं।

समकालीन चित्रकला के सन्दर्भ में बाजारवाद को समझने के लिए बाजार के मूल चरित्र को समझना होगा। आमतौर पर किसी उद्योग के माध्यम से अपने विकय से लाभ अर्जित करने के उद्देश्य से उत्पाद को ग्राहक तक पहुँचाने के लिए उत्पादकों को एक बाजार की आवश्यकता होती हैं। जहाँ मूल उत्पाद को ग्राहक की अपेक्षा के आधार पर बदला जाता हैं।

ग्राहक की मांग के अनुसार परिवर्तित उत्पाद के गुणों में समायोजन करता हैं । ग्राहक की मांग के अनुसार उत्पाद में परिवर्तन बाजार व्यवस्था की धुरी हैं, किन्तु जहाँ प्रश्न कला और स्वतंत्र अभिव्यक्ति का हो वहाँ ये नियम बाध्यता का कार्य करते हैं।

आज के समाज की समस्त आधुनिकता ही लगभग नकली आधुनिकता सी प्रतीत होने लगी हैं। उपभोक्ता संस्कृति ही आज के समाज की सच्चाई है। इसका असर निश्चय ही परिवेश पर, समाज पर, उसकी जीवन शैली पर और कला पर भी आया है।

आज कलाकृतियों की बड़ी–बडी बोलियाँ लगाई जाती हैं। जब कला के बाजार में विश्व प्रसिद्ध चित्रकार वाने गॉग की सूरजमुखी श्रृंखला का एक चित्र ढाई करोड पाउंड में बिका तो वो तहलका हुआ, जिससे कला की दुनिया में जबरदस्त मोड़ आया । आज का कलाकार कला निर्मिति के लिए नहीं, बल्कि इसी बाजार को ध्यान में रखकर रच रहा हैं । पुरातनवादी कलाकारों ने चाहें वे देश– विदेश कही के भी रहे हो, अपने को कला के प्रति समर्पित कर रखा था। वे कला साधना के लिए कला निर्मित करते थे। आज के समाज का धनिक वर्ग कला कृतियों को फैशन की संज्ञा देने लगा हैं। इससे भी कला की मूल भावना में फर्क आया हैं।

पाब्लो पिकासो जब यह कहते हैं कि "पेटिंग आपका घर सजाने के लिए नही बनाई जाती। वह युद्ध के हमले और दुश्मन से बचाव के लिए एक हथियार हैं।" यहाँ पर निरसंदेह पिकासो का तात्पर्य कला मूल्यों के दुश्मनों से उसकी रक्षा करने का ही हैं।

यह एक खुला यथार्थ है कि हम समकालीन कला के उस दौर से गुजर रहें है जहाँ कला गतिविधियाँ तेजी से बढ़ी है। अनेकों नई– नई कला दीर्घाएं खुली हैं। नए कलाकारों का भी काम सामने आया है। कलाकृतियों का बाजार मूल्य भी बढ़ा है और कला संग्राहक भी सचेत हो रहे हैं। प्रदर्शनियों की संख्या आज जितनी तेजी से अधिक बढ़ रही हैं, उतनी पहले कभी नही हुआ करती थी। चित्रों की फ्रेमिंग, उनकी कैटेलोगिंग उनके रख– रखाव और तकनीकी दृष्टि से परफेक्शन भी बढ़ा है, लेकिन कला मूल्यों का स्तर बहुत नीचे गिरा हैं। यह आज हमारे समाज कला– जगत की भयानक त्रासदी का नमूना है, जिसमे कलाकार कला साधना को एक ओर रखकर, कलाकृति की बाजार में कीमत की ओर दृष्टि टिकाए रखता हैं।

इसलिए अपनी परम्पराओं और समाज से जुड़े रहना हमारे लिए जरूरी है। आज भारतीय कला को अन्तर्राष्ट्रीय कला– जगत में अपना प्रभाव बनाए रखने के लिए अपनी मिट्टी की गंध के सहारे की जरूरत हैं, जो उसको अपने समाज से मिलेगी। आज का युवा कलाकार अपने माहौल, परिवेश और रोजमर्रा के बुनियादी सवालों के लिए जुडाव महसूस नहीं कर पा रहा है।

निष्कर्ष– पिछले वर्षों से कला में बढ़ती व्यावसायिकता के कारण कलाकार स्वाध्याय, मौलिक परिकल्पना और समपर्ण से विरत हो रहे हैं। तथा कला की सृजनशीलता के प्रति उपेक्षा भाव बरत रहे हैं, जो चिंता का विषय है। शिल्प और तकनीकी पर जोर देकर बहुथा विषय वस्तु को भी नजर अंदाज करने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। तत्कालीन समय में भारतीय कला

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

परिदृश्य में एक साथ कई पीढ़ियों के कलाकार उपस्थित है, जो अनेक कला माध्यमों में दृष्टि, विन्यास, विचार और प्रयोग के स्तर पर सबके बीच प्रतिष्ठित है, जब वे न होंगे तो हमारे कलाकार किनसे सीख और प्रेरणा ले सकेंगे। ऐसा क्यों नहीं हो पा रहा है कि नई पीढियॉ अपनी शैलियों के मूधर्न्य कलाकारों से प्रेरित हो उनकी तरह वे सृजन की नई विधाओं खोजे और ऐसा वातावरण निर्मित करे, जिसमें हम कला के विराट बोध को पा सकें। इस दशक के अन्त तक यह निश्चित है कि सैकडों महान चित्रकारों के मूल चित्रों को नीलाम घरों में ही देखा जा सकेगा। जहाँ आम कला जिज्ञासु का प्रवेश वर्जित हैं। धनाढ्य वर्ग के लोगों के पास इनके संरक्षण और प्रदर्शन का अधिकार होगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. भौमिक य अशोक– कला त्रैमासिक कला बाजार, विशेषांक (राज्य ललित कला अकादमी)।
2. भारतीय य मीनाक्षी समकालीन कला (राष्ट्रीय ललित कला अकादमी)।
3. http://mangalbhart-com
4. prichy.blogspot.com

*****